हिमालय के क्षरित पारिस्थितिकी तंत्र पुन:स्थापन के लिए सतत भूमि प्रबंधन विषय पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

स्थान: भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान,शिमला

(दिनांक: दिसंबर 18-20, 2024)

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान,शिमला में हिमाचल प्रदेश और केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के विभिन्न विभागों के अधिकारियों के लिए **'हिमालय के क्षरित पारिस्थितिकी तंत्र पुन:स्थापन के लिए सतत भूमि प्रबंधन'** विषय पर पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 18-20 दिसंबर, 2024 तक किया गया। इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन, कृषि, बागवानी, लोक निर्माण विभाग (पी.डब्ल्यू.डी) और सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य (आई.पी.एच) विभाग के ओर से क्रमश: सहायक वन संरक्षक, कृषि विकास अधिकारी, कृषि विस्तार अधिकारी, बागवानी विकास अधिकारी, बागवानी विस्तार अधिकारी, एस.डी.ओ और कनिष्ठ अभियन्ता स्तर के कुल इक्कीस (21) अधिकारियों ने भाग लिया। यह प्रशिक्षण भारतीय वनिकी अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद देहरादून के **सैंटर ऑफ एक्सलेन्स ऑन सस्सटेनबल लैंड मैनेजमेंट (सी.ओ.ई.एस.एल.एम)** द्वारा प्रायोजित किया गया। **डॉ. संजय सूद,आई.एफ.एस,** अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग दिनांक 18.12.2024 को मुख्य अतिथि के रूप में प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में शामिल हुए।

पहला दिन- (18.12.2024)

उद्घाटन सत्र: प्रारंभ में, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक **डॉ.संदीप शर्मा** ने मुख्य अतिथि और सभी प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनंदन व स्वागत किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भूमि क्षरण एक बड़ी समस्या है जो दुनिया भर में बड़े पैमाने पर लोगों को प्रभावित कर रही है। उन्होंने बताया कि देहारादून में स्थित **सैंटर ऑफ एक्सलेन्स ऑन सस्सटेनबल लैंड मैनेजमेंट (सी.ओ.ई.एस.एल.एम)** केंद्रीय स्तर पर एक नोडल एजेंसी है जो भूमि क्षरण की समस्याओं के उचित समाधान और भूमि संसाधनों के सतत प्रबंधन के प्रयासों के समन्वय के लिए काम कर रही है। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी भूमि क्षरण तटस्थता लक्ष्यों को

प्राप्त करने के लिए विभिन्न हितधारकों की क्षमता निर्माण गतिविधियों को संबल प्रदान करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की एक कड़ी है। अपने संबोधन में, उन्होंने हिमालयन पारिस्थितिकी प्रणालियों के भू- संरचनाओं विज्ञान पर भी विचार साझा किए और क्षरित भूमि प्रबंधन के लिए आवश्यक स्थानीय कृषि वानिकी मॉडल, ढलान स्थिरीकरण, वाटरशेड प्रबंधन प्रणालियों और आवश्यक विकासात्मक गतिविधियों के लिए पर्यावरण-अनुकूल उपयुक्त उपायों को अपनाने पर ज़ोर दिया।

डॉ. आर.के. वर्मा (प्रशिक्षण समन्वयक)
प्रशिक्षण मॉड्यूल के बारे जानकारी देते हुए

इसके बाद, **डॉ.आर.के.वर्मा,वैज्ञानिक-जी व प्रशिक्षण समन्वयक** ने कार्यक्रम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान करते हुये प्रशिक्षण मॉड्यूल में सम्मिलित विविध विषयों के बारे में संक्षेप में रूपरेखा प्रस्तुत की। उसने बताया कि तकनीकी सत्रों के दौरान के अनुसंधान संस्थानों जैसे डी.आर.डी.ओ- उच्च उन्नतांश अनुसंधान रक्षा संस्थान,लेह,आई.सी.ए.आर-भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, अनुसंधान केंद्र के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, बागवानी और वानिकी विश्वविद्यालय(यू.एच.एफ), नौणी के शिक्षाविद, तथा सैंटर ऑफ एक्सलेन्स ऑन सस्सटेनबल लैंड मैनेजमेंट(सी.ओ.ई.एस.एल.एम) से विषय-विशेषज्ञ प्रतिभागियों को सतत भूमि प्रबंधन से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं और विशेष रूप से नाजुक हिमालयी क्षेत्र के परिपेक्ष्य में उपयोगी भूमि प्रबंधन प्रणालियों पर अपने ज्ञान/अनुभव को साझा करेंगे। उन्होंने आगे बताया सतत भूमि प्रबंधन बहु-आयामी विषय है और इसी आशय से प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों के सहक्रियात्मक व समन्वित प्रयासों द्वारा प्रकृतिक संसाधनो के संरक्षण को बढ़ावा देना है। प्रशिक्षण समन्वयक ने कहा कि तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत व्यावहारिक ज्ञान/अनुभवो प्रदान करने के उद्देशय से एक दिन एक्सपोज़र विजिट के लिए निर्धारित किया गया है। उन्होंने बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र, कंडाघाट तथा यू.एच.एफ. नौणी के क्षेत्रीय भ्रमण के बारे में प्रतिभगियों को अवगत करवाया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी

अपने उद्घाटन भाषण में, **डॉ.संजय सूद**, **आई.एफ.एस**, ने प्राकृतिक संसाधनों के महत्व पर प्रकाश डाला और इन संसाधनों द्वारा प्रदान की जाने वाली भिन्न- भिन्न पारिस्थितिक सेवाओं के बारे में रोचक जानकारी प्रदान की। अपने वक्तव्य में, उन्होंने जीवन के आवश्यक आधारभूत तत्वों-पृथ्वी,आकाश,वायु, और जल के संतुलित उप्योग एवं संरक्षण पर ज़ोर दिया। भूमि क्षरण की तीव्र दर पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह नीति निर्माताओं,लोगों और सभी हितधारकों के लिए एक गंभीर समस्या है और इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भूमि क्षरण की चुनौती के कारण मानव का भविष्य खतरे में है। हिमालय क्षेत्र के परिपेक्ष्य में, **डॉ.सूद** ने कहा कि वनों की कटाई, विकासात्मक गतिविधियों की अधिकता, संसाधनों का अत्यधिक दोहन, रसायनों का उपयोग, बाढ़ और भूस्खलन जैसे कई करको के चलते इस संवेदनशील क्षेत्र के नाज़ुक पारिस्थितिकीय परिवेश का तेजी से

ह्रास हो रहा हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि संसाधनों का दोहन पूरी तरह से विवेकपूर्ण तरीके से किया जाना चाहिए और क्षतिपूर्ति के उचित प्रयास किए जाने को प्राथमिकता देना बहुत जरूरी है।
उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय बहुत प्रासंगिक है और यह प्रतिभागियों में भूमि प्रबंधन की प्रभावी प्रणालियों के बारे वैज्ञानिक समझ विकसित करने में सहायक होगा। उन्होंने **सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ऑन सस्टेनेबल लैंड मैनेजमेंट (सी.ओई.एस.एल.एम)**, देहरादून और **हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान** की इस पहल के लिए सराहना की। **डॉ.संजय सूद** ने आयोजको को कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए कहा कि निश्चित रूप से इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम से पेशेवरों के ज्ञान और कौशल में वृद्धि होगी और वे इस ज्ञान का उपयोग अपने- अपने कार्यक्षेत्रों में कर पाएंगे। उद्घाटन सत्र के अंत में, डॉ. रणजीत कुमार, वैज्ञानिक-एफ ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। श्रीमती शिल्पा, सी.टी.ओ ने उद्घाटन सत्र की कार्यवाही का संचालन किया।

डॉ.रणजीत कुमार, वैज्ञानिक-एफ

श्रीमती शिल्पा, सी.टी.ओ

तकनीकी सत्र: सत्र की शुरुआत में सर्वप्रथम, **सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ऑन सस्टेनेबल लैंड मैनेजमेंट (सी.ओई.एस.एल.एम)** से आए विषय-विशेषज्ञ **डॉ.मनीष कुमार सिंह, वैज्ञानिक–ई** ने लैंड डीग्रडेशन न्यूट्रेलिटी (एलडीएन) और सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया, जिसके माध्यम से उन्होंने ने भूमि क्षरण की अवधारणा, भूमि क्षरण तटस्थता और संयुक्त राष्ट्र एजेंडा 2030 के अंतर्गत सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ इसके संबंध के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। इसके अतिरिक्त, डॉ.सिंह, ने सी.ओई.एस.एल.एम की विविध गतिविधियों के बारे में भी विचार सांझा किए। इसके बाद, दूसरे विषय विशेषज्ञ **डॉ. तनय बर्मन** ने प्रतिभागियों को भूमि क्षरण तटस्थता (एलडीएन) के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना पर व्याख्यान दिया। मुख्य रूप से, उन्होंने यूएनसीसीडी फ्रेमवर्क के आलोक में प्रमुख संकेतकों, चुनौतियों और भूमि क्षरण के परिणामों के विषय में प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की। साथ ही साथ, भूमि क्षरण का आकलन करने और सतत भूमि प्रबंधन पर क्षमता निर्माण के लिए सीओईएसएलएम द्वारा निर्धारित व्यापक उद्देश्यों को गहनता से समझाया।

डॉ.मनीष कुमार सिंह, वैज्ञानिक–ई

डॉ. तनय बर्मन

इसी क्रम में, **श्री. अजय चौहान** ने यूएनसीसीडी फ्रेमवर्क के तहत भूमि क्षरण चुनौतियों के समाधान विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया। तत्पश्चात, डी.आर.डी.ओ- उच्च उन्नतांश अनुसंधान रक्षा संस्थान,लेह के वरिष्ठ वैज्ञानिक **डॉ. सेरिंग स्टोबदान** ने शीत मरुस्थलीय क्षेत्रों के लिए उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों के बारे में सार्थक व ज्ञानवर्धक पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण दिया, जिसमे उन्होंने ट्रांस-हिमालयी क्षेत्रों में जीवन यापन की दुश्वारीयों,पारंपरिक फसल प्रणालियों के दोषो को प्रमुखता से उजागर किया और विभिन्न नवीन प्रौद्योगिकियों और मौजूदा कृषि तकनीकों के अनुकूलन के बारे में विस्तार से बताया। इस प्रस्तुतीकरण में, उन्होंने किसानों द्वारा क्षेत्र में उन्नत प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग की जानकारी भी साझा की।

दूसरा दिन- (19.12.2024)

एक्सपोज़र विजिट: प्रतिभागियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने और भू- संसाधनो में समुदायों की भागीदारी के बारे में जानकारी देने के उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रम का दूसरा दिन क्षेत्रीय भ्रमण को निर्धारित किया गया था। सबसे पहले, प्रतिभागियों को कंडाघाट स्थित बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण स्टेशन का क्षेत्रीय भ्रमण कराया गया। डॉ.**अमित विक्रम**, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रतिभागियों को स्टेशन पर चलायी जा रही अनुसंधान गतिविधियों और प्रौद्योगिकियों पर प्रस्तुति दी। वहाँ पर उन्होंने स्टेशन के फार्मो का भी दौरा भी किया तथा विभिन्न फलदार पौधों की खेती, प्रूनिंग/कटिंग के तरीकों, बागवानी की उन्नत प्रणालियों के बारे आवश्यक जानकारियाँ प्राप्त की। इसके बाद, प्रतिभागी बागवानी और वानिकी विश्वविद्यालय(यूएचएफ), नौणी **फ़ील्ड विजिट** पर गए। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों

यूएचएफ नौणी के क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान प्रतिभागी

/विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को फल विज्ञान विभाग, मृदा और जल संरक्षण विभागों द्वारा चलायी जा रही अनुसंधान गतिविधियों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान सांझा किया। प्रतिभागियों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्मों, ग्रीन हाउस व पॉली टनल में अनुसंधान परीक्षणों का भी अवलोकन किया।

तीसरा दिन- (19.12.2024)

तकनीकी सत्र: प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन सबसे पहले **डॉ.पंकज पंवर, प्रधान वैज्ञानिक, आई.सी.ए.आर-भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान**,अनुसंधान केंद्र, चंडीगढ़ ने अलग- अलग एग्रो-क्लाईमैटिक क्षेत्रों के संदर्भ में मृदा और जल संरक्षण तकनीकों पर एक प्रभावशाली और जानकारीपूर्ण प्रस्तुति दी। उन्होंने भूमि क्षरण की अवधारणा की जानकारी प्रदान की तथा मुख्य रूप से हिमालयी परिप्रेक्ष्य में इस समस्या की के बारे में व्यापक ज्ञान सांझा किया। इसके अतिरिक्त, **डॉ. पंवर** ने मृदा अपरदन को रोकने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक विधियों, उपयुक्त वृक्ष और घास की प्रजातियों के बारे में भी विस्तार से बताया।

डॉ..पंकज पंवर,प्रधान वैज्ञानिक(आई.सी.ए.आर-आई.आई.एस.डब्ल्यू.आर.) ,चंडीगढ़

इसके बाद, **डॉ. डी. आर. भारद्वाज** प्रभाग प्रमुख सिल्विकल्चर विभाग एंड एग्रोफोरेस्ट्री,कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री, यूएचएफ, नौणी ने उत्तर- पश्चिमी हिमालय के ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए कारगर कृषि-वानिकी प्रणालियों पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को भूमि के सतत प्रबंधन में कृषि-वानिकी की भूमिका और इससे जुड़े कई लाभों से अवगत किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि किस प्रकार कृषि वानिकी मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, उत्पादकता में वृद्धि, कार्बन पृथक्करण को बढ़ाने और जैव विविधता संरक्षण में योगदान देती है।

डॉ. डी. आर. भारद्वाज, यूएचएफ, नौणी

तत्पश्चात, **डॉ. नवीन शर्मा**, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, यूएचएफ नौणी ने आजीविका–अर्जन के लिए विभिन्न बागवानी फसलों के योगदान पर सुंदर प्रस्तुतीकरण दिया। अपने प्रस्तुतीकरण में उन्होंने फलदार पौधों जैसे सेब, खुबानी, प्लम और गुठलीदार फलों की अनेकों उपयोगी किस्मों की तथा इनकी उत्पादक क्षमताओं से संबन्धित रोचक और महत्वपूर्ण जानकारी प्रतिभागियों को प्रदान की।

डॉ. नवीन शर्मा, यूएचएफ, नौणी

तकनीकी सत्र के अंत में, **डॉ.संदीप शर्मा**, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने सामुदायिक आजीविका- अर्जन में औषधीय पौधों व गैर काष्ठ वन उत्पादों की भूमिका विषय पर प्रतिभागियों का ज्ञानवर्धन किया। उन्होंने औषधीय पौधों की खेती के माध्यम से आय बढ़ाने के लिए विकल्पों के बारे में बताया। अपने प्रस्तुतीकरण में उन्होंने, औषधीय पौधों और गैर काष्ठ वन उत्पादों से संबन्धित चलायी जा रही शोध परियोजना की भी जानकारी प्रदान की। सभी तकनीकी सत्रों में, इंटरैक्टिव सैशन के दौरान , प्रतिभागियों ने वैज्ञानिकों और विषय- विषयज्ञों से व्यापक चर्चा की और सतत भूमि प्रबंधन से संबन्धित कई प्रश्न भी पूछे। विषय- विषयज्ञों द्वारा, प्रतिभागियों के सभी प्रश्नो का जवाब प्रदान कर उनकी शंकाओं का निवारण किया गया ।

डॉ.संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं

समापन सत्र:

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता **श्री आर.एल.सांगा**,आई.एफ.एस, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग द्वारा की गई। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान संस्थान के सभी वैज्ञानिक और अधिकारी भी समापन सत्र के दौरान उपस्थित रहे। प्रारंभ में, प्रतिभागियों ने बारी बारी से अपने फ़ीड-बैक और अनुभव प्रस्तुत किए। सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से सतत भूमि प्रबंधन की बारीकियों पर उपयोगी ज्ञान प्रदान करने के लिए संस्थान का आभार व्यक्त किया। **डॉ.आरके वर्मा**, वैज्ञानिक-जी एवं प्रशिक्षण समन्वयक ने सभी प्रतिभागियों को उनकी सक्रिय भागीदारी और प्रशिक्षण कार्यक्रम में गहरी रुचि दिखाने के लिए धन्यवाद प्रदान किया । उन्होंने आश्वासन दिया कि प्रतिभागियों के सुझावों को भविष्य के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किया जाएगा।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि **श्री आर.एल.सांगा**,आई.एफ.एस ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए आयोजकों को बधाई दी और उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से विविध क्षेत्रों के पेशेवर लाभान्वित होंगे। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान व अनुभवों को अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में क्रियान्वित करने की सलाह दी। तत्पश्चात मुख्य अतिथि द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। सुश्री शिल्पा, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने समापन सत्र का संचालन किया और श्री दुष्यंत कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा तकनीकी सत्रों का संचालन किया गया। अंत में, यह तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ.

प्रमाणपत्रों का वितरण

मीडिया–कवरेज़

भू–संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर लोगों ने अपने अस्तित्व को खुद खतरे में डाला : डा. संजय

बोले, भू-संसाधनों के क्षरण से विश्व में भोजन सुरक्षा व आजीविका की पैदा हो रही समस्या

शिमला, 18 दिसम्बर (भूपिन्द्र): वन विभाग के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. संजय सूद ने कहा कि मनुष्यों ने विभिन्न तरीकों से भू-संसाधनों का अत्यधिक दोहन करके स्वयं अपने अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। उन्होंने कहा कि आज विश्व भर में भू-संसाधनों के हो रह क्षरण के कारण अरबों लोगों के भोजन सुरक्षा और आजीविका की बड़ी समस्या पैदा हो रही है।

यह बात उन्होंने बुधवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के विभिन्न विभागों के अधिकारियों के लिए आयोजित हिमालय के क्षरित पारिस्थितिक तंत्र के पुन: स्थापन के लिए सतत् भूमि प्रबंधन कारगर पद्धतियों विषय पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ करते हुए कही। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के महत्ता को उजागर करते हुए कहा कि सदियों से भूमि, वन और जलीय पारितंत्र नि:स्वार्थ भाव से मानव मात्र की सेवा कर रहे हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन विभाग से सहायक वन अरण्यपाल, कृषि विभाग से कृषि विकास अधिकारी, उद्यान विभाग से बागवानी विकास अधिकारी और लोक निर्माण विभाग से एस.डी.ओ. तथा कनिष्ठ अभियंता स्तर के 21 अधिकारी भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहारादून के सैंटर ऑफ एक्सलैंस फॉर सस्टेनेबल लैंड मैनेजमैंट द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम के आरंभ में संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने कहा कि सैंटर ऑफ एक्सलैंस फॉर सस्टेनबल लैंड मैनेजमैंट अखिल भारतीय स्तर पर भूमि क्षरण को रोकने और सतत् भूमि प्रबंधन के कार्य प्रमुखता से कर रहा है।

उन्होंने हिमालय पारितंत्र के परिपेक्ष्य में कारगर भू-प्रबंधन रणनीतियों, कृषि वानिकी, ढलान स्थिरीकरण और वाटरशैड प्रबंधन के महत्व को भी उजागर किया। एच.एफ़.आर.आई. के वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डा. आर.के. वर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी।

दिव्य हिमाचल

अनुसंधान संस्थान में प्रशिक्षण शिविर शुरू

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी में भूमि प्रबंधन कारगर पद्धतियों विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर बुधवार को शुरू हो गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून का सेंटर ऑफ एक्सिलेंस फॉर संस्टेनबल लैंड मैनेजमेंट करवा रहा है। वन विभाग के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल (आईएफएस) डॉ. संजय सूद ने कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। संवाद

अमर उजाला

भू-संसाधनों के दोहन से मानव जीवन खतरे में

- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में शुरू हुआ प्रशिक्षण शिविर

विशेष संवाददाता-शिमला

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरणयपाल डा. संजय सूद ने कहा कि मनुष्य ने विभिन्न तरीकों से भू-संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर अपने अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। सदियों से भूमि, वन और जलीय पारितंत्र नि:स्वार्थ भाव से मानव मात्र की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने जीवन के लिए पांच महाभूतों पृथ्वी, जल, आकाश, अग्नि और वायु की संतुलित समन्वय स्थापित पर जोर दिया। मुख्यातिथि ने कहा कि आज विश्व भर में भू-संसाधनों के हो रह क्षरण के कारण अरबों लोगों के भोजन सुरक्षा और आजीविका की बड़ी समस्या पैदा कर दे हैं। उन्होंने संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि निश्चित तौर पर स्थापित सेंटर ऑफ एक्सलेंस फॉर सस्टेनबल लैंड मैनेजमेंट, देहारादून और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किए जा रहा प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रासंगिक और व्यवहारिक है। डा. संजय सूद ने कहा कि इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान और अनुभवों से उन्हें अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में सतत भूमि प्रबंधन के प्रयासों को और अधिक सुदृढ़ तेज करने में अवश्य ही मदद मिलेगी। वे बुधवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में शुरू हुए हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के विभिन्न विभागों के अधिकारियों के तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में वन विभाग से सहायक वन अरण्यपाल, कृषि विभाग से कृषि विकास अधिकारी, उद्यान विभाग से बागबानी विकास अधिकारी और पौडब्ल्यूडी से एसडीओ और कनिष्ठ अभियंता स्तर के 21 अधिकारी भाग ले रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद, देहारादून में स्थापित सेंटर ऑफ एक्सलेंस फॉर सस्टेनबल लैंड मैनेजमेंट, द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है।

निदेशक ने सभी प्रतिभागियों का किया स्वागत

संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने मुख्यातिथि और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2019 में नई दिल्ली में आयोजित कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टी सम्मेलन के दौरान भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद में सेंटर ऑफ एक्सलेंस फॉर सस्टेनबल लैंड मैनेजमेंट को स्थापित करने की पहल की गई। वर्तमान में यह केंद्र अखिल भारतीय स्तर पर भूमि क्षरण को रोकने और सतत भूमि प्रबंधन के प्रयासों को समन्वित करने में प्रमुखता से कार्य कर रहा है।

पंजाब केसरी

https://himbumail.com/home/latest/hfri-train-manpower

अत्याधिक दोहन से स्वयं का अस्तित्व खतरे में

शिमला : वन विभाग के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डा. संजय सूद ने कहा कि मनुष्य ने विभिन्न तरीकों से भू-संसाधनों का अत्याधिक दोहन कर स्वयं के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है। बुधवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में हिमाचल और जम्मू-कश्मीर के विभिन्न विभागों के अधिकारियों के लिए आयोजित "हिमालय के क्षरित पारिस्थितिक तंत्र के पुन:स्थापन के लिए सतत भूमि प्रबंधन कारगर पद्धतियों" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर कही। उन्होंने कहा कि सैंटर आफ एक्सीलेंस फार सस्टेनेबल लैंड मैनेजमेंट देहारादून और हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यावहारिक है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक वन अरण्यपाल, कृषि विकास अधिकारी, बगवानी विकास अधिकारी और लोक निर्माण विभाग से एसडीओ तथा कनिष्ठ अभियंता स्तर के 21 अधिकारी भाग ले रहे हैं। संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने कहा कि सैंटर आफ एक्सीलेंस फार सस्टेनेबल लैंड मैनेजमेंट अखिल भारतीय स्तर पर भूमि क्षरण को रोकने और सतत भूमि प्रबंधन के कार्य प्रमुखता से कर रहा है। एचएफआरआइ के वरिष्ठ विज्ञानी और प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डा. आरके वर्मा ने जानकारी दी। (रब्बू)

दैनिक जागरण